स्पैन का पहला आवरण पृष्ठ

राष्ट्रपति जॉन एफ़. केनेडी अपने पद की शपथ लेते हुए।

प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू प्रतिनिधि दलीप सिंह सौंद के

अतीत के झरोखे से

45 वर्ष पहले

दीपांजली काकाती

वर्ष 1961 में अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति **जॉन एफ़. केनेडी** के साथ एक नए युग का शुभारंभ हुआ। वह 20वीं सदी में जन्मे अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति थे। उस वर्ष 20 जनवरी को उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में आह्वान किया- ''यह मत पूछिए कि देश आपके लिए क्या कर सकता है, यह पूछिए कि आप अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं।'' इस आह्वान ने न केवल अमेरिका बल्कि पूरे विश्व को सोचने के लिए प्रेरित किया। दुनिया आमतौर पर इस बात के लिए प्रेरित हुई कि यह पूछने के बजाय कि अमेरिका उनके लिए क्या कर सकता है, यह पूछा जाना चाहिए कि मनुष्य की स्वतंत्रता के लिए हम मिलकर क्या कर सकते हैं।

सीनेट में भारत को दीर्घकालीन सहायता देने संबंधी केनेडी-कूपर प्रस्ताव के सह-आयोजक के रूप में केनेडी भारत के लिए पहले से ही एक परिचित व्यक्ति थे। उन्होंने विकासशील देशों को अधिक आर्थिक सहायता देने की आवाज उठाई। 1959 में वाशिंगटन में उन्होंने अपने एक भाषण में कहा: ''मानव की मान-मर्यादा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए भारत अपनी परंपरा का पालन करता है।''

वर्ष 1960 में नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास ने **स्पैन** पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। प्रथम अंक की एक टिप्पणी के अनुसार इसका उद्देश्य था, ''शब्दों और चित्रों के पुलों के माध्यम से (भारत और अमेरिका की) साझा उम्मीदों, साझा खुशियों और साझा लक्ष्यों तथा मूल्यों को जोड़ना।'' विगत 45 वर्षों से स्पैन अग्रणी अमेरिकी तथा भारतीय लेखकों की रचनाएं प्रकाशित करके आपसी समझ और लोगों के बीच संपर्क को बढ़ाने में मदद दे रही है।

बेहतर जीवन, आपदा से उबरने या आजाद एवं लोकतांत्रिक देश में रहने का प्रयास करने वाले लोगों की मदद के लिए अपनी परंपरा का निर्वाह करते हुए अमेरिकी कांग्रेस ने 4 सितंबर, 1961 को अपनी वचनबद्धता को दोहराते हुए विदेश सहायता अधिनियम को स्वीकृति प्रदान की। विदेश सहायता का ताना-बाना नए सिरे से बुना गया। 3 नवंबर 1961 को राष्ट्रपति केनेडी ने अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी '**यू एस एड**' की स्थापना की। इस एजेंसी ने भारत सहित विभिन्न देशों में अलग-अलग एजेंसियों के माध्यम से पहले से चल रहे अमेरिकी सहायता के प्रयासों को एकजुट किया।

5 मई 1961 को फ्रीडम 7 अंतरिक्ष यान ने **एलन शेपर्ड** को पृथ्वी के वायुमंडल से परे पहुंचा दिया और उन्होंने अंतरिक्ष में कदम रखने वाले प्रथम अमेरिकी नागरिक का सम्मान अर्जित किया। शेपर्ड वहां पहुंचे जहां तब तक केवल रूस के यूरी गागारिन पहुंचे थे। अमेरिकी नौ सेना के

साथ।

परीक्षण पायलेट शेपर्ड ने 15 मिनट तक उपकक्षा में उड़ान भरी जिसमें से पांच मिनट अंतरिक्ष में गुजारे। इस मौके पर उनके उद्‌गार थे: ''बड़े और बेहतर लक्ष्य की ओर एक छोटा-सा पहला कदम।''

दलीप सिंह सौंद ने वह सम्मान अर्जित किया जिसे इससे पहले कोई भारतीय अमेरिकी नागरिक प्राप्त नहीं कर पाया था। पंजाब के सौंद केलिफोर्निया के एक कपास चुनने वाले फार्म के 'फोरमैन' से अमेरिकी 'कांग्रेस मैन' बन गए। वह 1956 में रिवरसाइड तथा इंपीरियल काउंटियों के केलिफोर्निया राज्य के 29वें कांग्रेसी जिले से प्रतिनिधि सभा (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्ज) के लिए चुने गए। 8 नवंबर 1960 को सौंद तीसरी बार पुनर्निर्वाचित हुए। जुलाई 2005 में अमेरिकी सीनेट ने टेमेकुला, कैलिफोर्निया में 30777 रेंचो कैलिफोर्निया रोड स्थित डाकघर का नामकरण सौंद के सम्मान में उनके नाम पर करने की सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की। दिसंबर में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने कैपिटल हिल में सौंद का चित्र लगाने की सहमति दी।

1961 में बड़ी संख्या में अमेरिकी नागरिक **वैगन ट्रेन** के आकर्षण में बंध गए। एनबीसी चैनल की इस श्रृंखला को उस वर्ष की सर्वोत्तम रेटिंग मिली जिसमें अमेरिकी गृहयुद्ध के तुरंत बाद मिसूरी से केलिफोर्निया तक यात्रा करने वाले प्रमुख परिवारों के अनुभवों को दर्शाया गया। श्रृंखला की हर कड़ी घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली बंद गाड़ियों के कारवां में सफर कर रहे किसी एक यात्री के अनुभव के इर्दगिर्द घूमती थी। इस श्रृंखला के अभिनेताओं में जॉन मैकिंटिरे, रॉबर्ट फुलर और राबर्ट हॉर्टन जैसे लोग थे। इसमें अर्नेस्ट बोर्गनाइन, शैली विंटर्स, लोऊ कॉस्टेलो तथा जेन वाइमन ने अतिथि कलाकार के रूप में भाग लिया।

विलियम शेक्सपियर ने **वेस्ट साइड स्टोरी** में न्यूयार्क शहर की यात्रा की। इस रोमांचक कहानी में सामंती गिरोहों -प्यूर्टो रिको के लोगों के खिलाफ श्वेत- की गाथा थी और इसे 1961 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म और सर्वोत्तम निर्देशन के साथ ही 10 एकेडमी अवार्ड मिले। 'रोमियो एंड जुलियट' से प्रेरित इस कहानी में अद्‌भुत संगीत और शानदार नृत्यों के साथ नस्लीय संघर्ष, बाल अपराध तथा शहरों की अंदरुनी समस्याओं को दर्शाया गया।

5 मई 1961 को नोबेल पुरस्कार विजेता **रवींद्र नाथ टैगोर** की जन्म शताब्दी के अवसर पर सत्यजित रे ने रवींद्र नाथ टैगोर वृत्तचित्र तैयार किया। यह एक महान कलाकार की ओर से दूसरे महान कलाकार के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि थी। वृत्तचित्र दुर्लभ दस्तावेजों और चित्रों में लेखक के जीवन के खास क्षणों की नाट्‌य प्रस्तुति थी। नई दिल्ली में इसे राष्ट्रपति के स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। श्रद्धांजलि के रूप में रे ने टैगोर की तीन कहानियों पर आधारित फिल्म 'तीन कन्या' भी बनाई।

26 जनवरी 1961 को अमेरिका ने भारत को एक अनोखा उपहार दिया। उसने स्वतंत्रता श्रृंखला के समर्थकों संबंधी दो नए डाक टिकट **मोहनदास कर्मचंद गांधी** के नाम समर्पित किए।

यह अमेरिकी श्रृंखला लोकतंत्र के अंतरराष्ट्रीय नेताओं की स्मृति को समर्पित है। ये डाक टिकट वाशिंगटन डी.सी में अमेरिका के पोस्ट मास्ट जनरल जे. एडवर्ड डे के स्वागत कक्ष में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर समर्पित किए गए। भारतीय कलाकार आर. एल. लेखी की एक ड्राइंग का इस्तेमाल डाक टिकटों पर गांधी के चित्र के बतौर किया गया।

19 दिसंबर 1961 को भारतीय सेना के ऑपरेशन विजय के संपन्न होने के साथ ही 450 वर्ष तक पुर्तगाली उपनिवेश रहने के बाद **गोवा** आजाद हो गया। वर्ष 1987 तक संघीय क्षेत्र के रूप में गोवा, दमन तथा दीव का हिस्सा रहने के बाद गोवा अलग राज्य बना।

भारत में जन्मे अमेरिकी संगीत निर्देशक **जुबिन मेहता** ने 1960 की बीतती गर्मियों के दौरान अमेरिका के न्यूयार्क शहर में पहली बार लेविसोन स्टेडियम सिंफनी ऑर्केस्ट्रा और फिलाडेल्फिया में रॉबिनहुड डेल सिंफनी आर्केस्ट्रा का संचालन किया। एंटन ब्रुकनर, रिचर्ड स्ट्रॉस तथा गुस्ताव माहलेर जैसे संगीत संचालकों की व्याख्या के लिए मशहूर संगीत संचालक जुबिन मेहता ने कालांतर में लॉस एंजिलीस फिलहार्मोनिक ऑर्केस्ट्रा (1962-78), न्यूयार्क फिलहार्मोनिक ऑर्केस्ट्रा (1978-91) और कई दूसरे संगीत ऑर्केस्ट्राओं का संगीत निर्देशन किया। ☐

चित्र © ए.पी.-डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

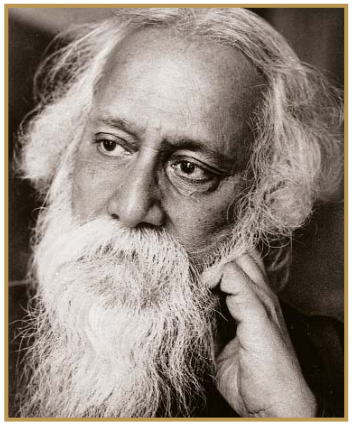

ऊपर से: एलैन शेपर्ड जूनियर, रवींद्रनाथ टैगोर, गोवा में भारतीय सैनिकों का स्वागत, वैगन ट्रेन

फिल्म वेस्ट साइड स्टोरी का एक दृश्य

जुबिन मेहता